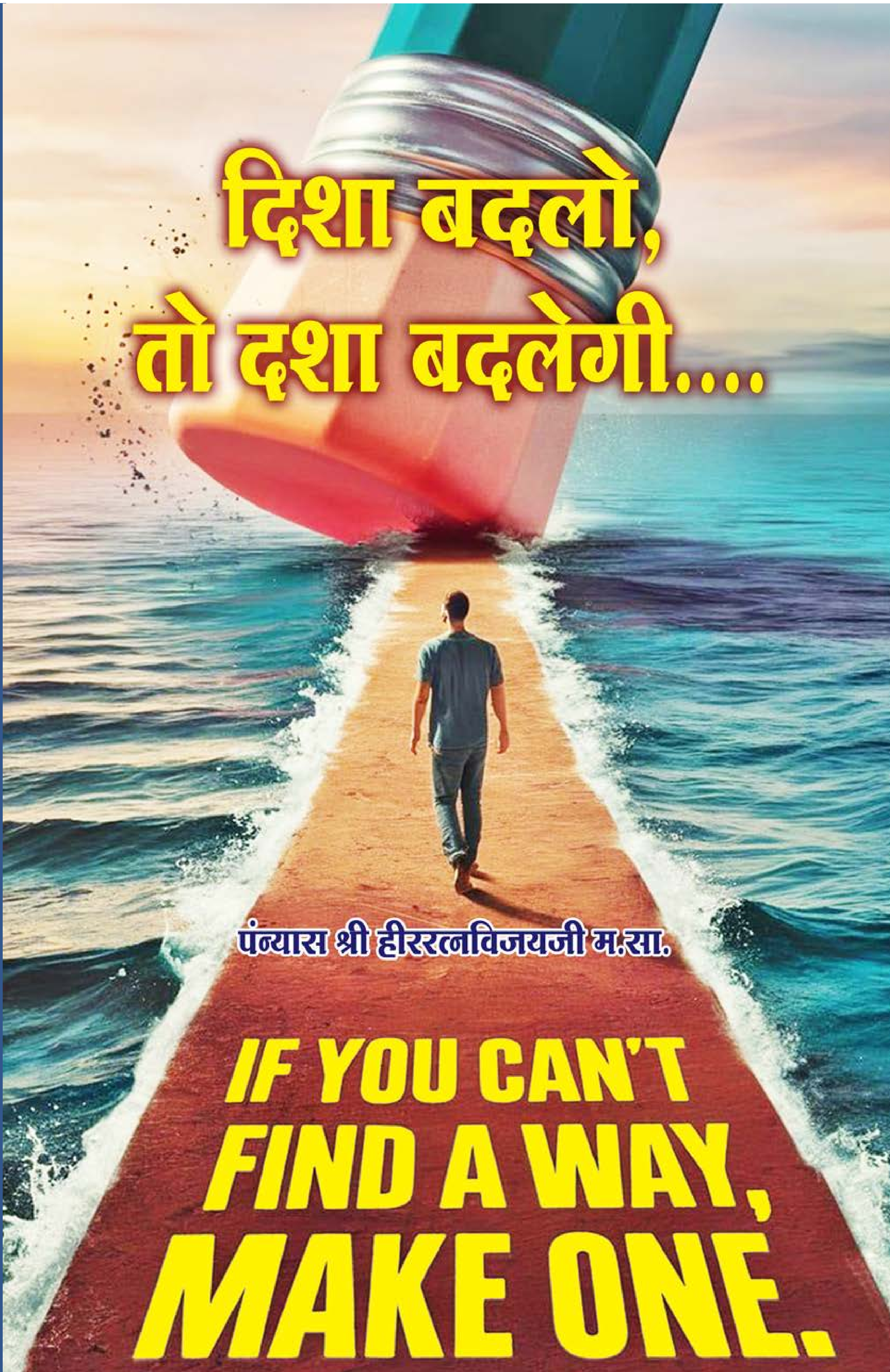

दिशा बदलो, तो दशा बदलेगी....

पंन्यास श्री हीररत्नविजयजी म.सा.

IF YOU CAN'T FIND A WAY, MAKE ONE.

दिशा बदलो,
तो दशा बदलेगी....

साईन शो साप्ताहिक अंतर्गत 'भारत में महाभारत' कोलम के लेखो का संग्रह

...लेखक..

आ. भ. श्री रश्मिरत्नसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य

पंन्यास श्री हीररत्नविजयजी म.सा.

...प्रथम संस्करण...

वि.सं. २०८०, कुल नकल : 1000

...किसी भी प्रकार की पूछताछ के लिए संपर्क करे...

8866355762

(ONLY WHATSAPP)

मूल्य : रु. 50/-

....प्राप्ति स्थान एवं मुद्रक...

करण ग्राफिक्स (साईन शो) मो. 98336 16004

...अनुक्रमणिका...

क्र.	नाम	पृष्ठ
1.	वर्तमान के बच्चों का दिमाग क्यों नहीं बढ़ रहा हैं ?	3
2.	कैसा शिक्षण लेना चाहिये - थियोरीकल या प्रेक्टिकल ?	5
3.	स्त्रियों को सुरक्षित करना हो तो ये रहा उसका रामबाण उपाय ।	7
4.	विश्वशांति का अनमोल उपाय ।	10
5.	वर्तमान समस्याओं का मूल कारण और उसका सचोट समाधान ।	14
6.	जिनशासन को विश्वशासन बनाना हो तो अपनी पाठशालाओं में कौनसा परिवर्तन करना पडेगा ?	16
7.	भारत को वापस विश्वगुरु और सोने की चीड़िया बनाना हो तो एज्युकेशन सिस्टम कैसा होना चाहिये ?	19
8.	क्या भारत जैसे अपने आर्य देश को छोड़कर धन के लिए अनार्य देशों में जाकर रहना चाहिये ?	21
9.	धर्म के नाम पर कहीं आपको टाइमपास तो नहीं करवाया जा रहा है ?	23
10.	सावधान ! कहीं आप धर्म की रक्षा के बदले अधर्म की रक्षा करने तो नहीं बैठ गए ?	25
11.	अगर अपने बच्चों को अत्यंत बुद्धिशाली बनाना हो तो ये रहा उसका उपाय।	27
12.	अगर आजीवन स्वस्थ रहना हो तो संस्कृत भाषा सीखकर संस्कृत के ग्रंथ खास पढे...	30
13.	अगर भारत देश की भावी पीढ़ी को बचाना हो और भारत को वापस विश्व गुरु बनाना हो तो...	33

1

वर्तमान के बच्चों का दिमाग क्यों नहीं बढ़ रहा हैं ?

प्रश्न : वर्तमान में हमारे बच्चे ड्रग्स-स्मोकिंग-ओनलाइन गेमिंग आदि के चक्कर में फंसते जा रहे हैं। फैशन और व्यसन में बरबाद होते जा रहे हैं। छोटी-छोटी बातों में सुसाइड कर रहे हैं। जो खुद को नहीं संभाल सकते वे परिवार-समाज और देश को कैसे संभाल सकेंगे? इस समस्या का है कोई समाधान ?

उत्तर : वर्तमान में बच्चे बिगडते जा रहे हैं उसके बहुत सारे कारणों में से एक मुख्य कारण है वर्तमान का एज्युकेशन सिस्टम। जो वास्तव में भारत का है ही नहीं। **हमारे देश में पहले गुरुकुल हुआ करते थे जिसमें पढकर कोई राम तो कोई कृष्ण बनता था।** आज की शिक्षा पद्धति में पढ़नेवाला कोई **रावण** तो कोई **कंस** बनता जा रहा है।

शिक्षा तो उसे कहते हैं कि जिसे ग्रहण करने के बाद व्यक्ति खुद सोच सके कि मेरा हित किसमें है और अहित किसमें? शिक्षा अर्थात् एक ऐसी **दीक्षा जिसमें जुड़नेवाला चाणक्य जैसा चतुर और शिवाजी जैसा शूरवीर बने** ।

जबकि वर्तमान शिक्षा पद्धति में माइंड पावर से ज्यादा मेमोरी पावर को महत्व दिया जा रहा है। वर्तमान एज्युकेशन सिस्टम अर्थात् एक ऐसा सिस्टम जहाँ बच्चों का दिमाग कितना चलता है उसकी नहीं परंतु उसे याद कितना रहता है उसकी ही परीक्षा ली जा रही है।

जहाँ जिसमें सज्जनता ज्यादा है उसे नहीं परंतु जिसमें स्मरणशक्ति ज्यादा है उसे नंबर वन दिया जा रहा है।

जहाँ उसे स्कूल के प्रत्येक विषय में कैसे फर्स्ट आना उस पर ही फोकस करवाया जा रहा है, भले ही वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पीछे रह जाए।

जहाँ उसे ऐसी चीजे रटवाई जा रही है जो परीक्षा के बाद भूल जाए तो भी कोई नुकसान नहीं और आजीवन याद भी रख ले तो कोई फायदा भी नहीं ।

अब ऐसे विचित्र सिस्टम में से पढ़कर जो बाहर निकलेगा वह फैशन और व्यसन का गुलाम न बने तो ही आश्चर्य। क्योंकि स्कूल-कॉलेज में उसकी मात्र उम्र और उंचाई ही बढ़ी है, अक्कल तो उतनी ही है जितनी स्कूल में प्रवेश के समय थी।

उल्टा हुआ यु कि स्कूल में प्रवेश के समय जो बुराइया नहीं थी वह भी अब आत्मसात हो गई।

याद रखना - दुनिया भर का याद रखने से अक्कल नहीं बढ़ती परंतु जो आजीवन काम लगे ऐसी बातों को याद रखता हो उसकी अक्कल बढ़ती है और ऐसी बातें हमारी स्कूलों में कितनी सीखाई जाती है वह तो आप सबको पता ही है। डेल कार्नेगी इंस्टिट्युट ने रीसर्च करके कहा है कि स्कूलों में जो सिखाया जाता है उसमें से १०-१५% ही हमारे जीवन में काम लगता है बाकी सब तो हमें बाहर से ही सीखना पड़ता है । अगर आप अपने बच्चों को मात्र दुकानदार नहीं परंतु समझदार भी बनाना चाहते हैं तो उन्हें ऐसी पुस्तके पढ़वाए कि जिन्हें पढ़ने के बाद वे खुद तो ना बिगडे पर जो बिगडे हुए है उन्हें भी सुधार सके ।

2 कैसा शिक्षण लेना चाहिये - थियोरीकल या प्रेक्टिकल ?

प्रश्न : वर्तमान में बेरोजगारी का आंकडा बढ़ता ही जा रहा है। जो अनपढ है उनको तो फिर भी काम मिल रहा है पर जो पढे-लिखे है वे ही अधिकांश बेरोजगार बनकर भटक रहे हैं। **15-20** साल पढ़ने के बाद भी काम के लिये भटकना पड रहा है। ऐसा क्यों है?

उत्तर : कोई भी काम करने से आता है, मात्र पढने से नहीं। जैसे कि साईकल सीखनी हो तो साईकल पर बैठकर चलाएंगे तो ही साईकल सीख सकेंगे। साईकल कैसे चलानी उसकी पुस्तके पढ़ने से साईकल नहीं आने वाली है। हमारे शास्त्रों में **4** प्रकार की बुद्धि का वर्णन आता है उसमें से **1** है कार्मिकी बुद्धि । अर्थात्-जो काम करते-करते प्रगट होती है। आज के रीसर्चर भी कहते है कि किसी भी कार्य में दक्षता प्राप्त करने के सामान्यतया **10** हजार घंटे मेहनत करनी पड़ती है तब जाकर उस कार्य में हम वैश्विक लेवल तक आगे बढ़ सकते हैं। चीन में बचपन से ही प्रत्येक बच्चे को प्रेक्टिकल नोलेज दिया जाता है । हमारे वर्तमान एज्युकेशन सीस्टम का सबसे बड़ा माइनस पोइन्ट यह है कि इसमें **99%** मात्र और मात्र थीयोरीकल नोलेज दिया जाता है इस कारण से ही सायंस में **99%** लाने वाले भी **99%** बच्चे कभी साइंटिस्ट नहीं बन सकते क्योंकि मात्र पुस्तकिया ज्ञान लिया है । पहले के समय में आगे दुकान व पीछे मकान होता था। बच्चा **10** साल की उम्र से ही अपने पिता की दुकान में काम करते-करते सीखना शुरू कर देता था और **15** वर्ष की उम्र तक तो दुकान चलाने लग जाता था । इसलिये उसे कभी बेरोजगार बनने का अवसर ही नहीं आता था।

आज भी अगर हमारे बच्चे जिस फिल्ड में जाना हो उस फिल्ड में जाकर काम सीखना शुरू कर दे तो **2-5** वर्ष में तो वे उस फिल्ड के अच्छे अनुभवी व्यक्ति बन जाएंगे। शुरू से ही सीखने के बदले **15-20** साल तक पढाई करने के बाद जब कोई काम ना मिले तब सीखने जाएंगे तो उस समय सीखने की क्षमता, सीखने का उत्साह सब कुछ घट गया होगा। परिणाम स्वरूप वे पढे लिखे बेरोजगार ही बनेंगे ।

जिनको काम नहीं मिल रहा है उनके लिये हमारी सरकारने **'काम सीखो और प्रति महिने 10 हजार रु. कमाओ'** यह जो योजना जारी की है यह अच्छी बात है परंतु यहीं कार्य अगर **10** वर्ष की उम्र से शुरू कर दिया जाए तो आने वाले **10** वर्षों में भारत के अंदर एक भी व्यक्ति बेरोजगार नहीं दिखेगा और भारत को वापस सोने की चीडीया बनने से कोई नही रोक सकेगा।

हमारे बच्चों को आगे बढ़ाना हो तो **18** वर्ष की उम्र तक काम सीख ना पाए ऐसा बाल मजदुरी प्रतिबंध का जो कानुन है उसे रद्द करवाना चाहिये क्योंकि काम ही नहीं करेंगे तो सीखेंगे कैसे ?

एज्युकेशन वास्तव में कैसा होना चाहिये यह अगर जानना चाहते हैं तो **Telegram app** में **Dangerous Education System** चेनल में रही हुई सभी सामग्री एक बार अवश्य देखें तथा इस विषय में आपके कोई सवाल हो तो हमें अवश्य पुछवाएं ।

3

स्त्रियों को सुरक्षित करना हो तो ये रहा उसका रामबाण उपाय

प्रश्न : वर्तमान में लडकियों पर रेप की घटनाए बढ़ती ही जा रही है। बहुत सारे केस में तो रेप के साथ मर्डर भी होते जा रहे है। अब ऐसा लग रहा है कि माँ के गर्भ के सिवाय कन्या कहीं सुरक्षित नहीं है। क्या है कोई इसका समाधान ?

उत्तर : जैसे स्त्री और पुरुषों के शौचालय अलग होते हैं, मुंबइ की लोकल ट्रेन के अंदर स्त्रियों के लिये अलग डब्बे की व्यवस्था होती है ताकि उनके साथ कोई छेडखानी न करें। स्त्री सुरक्षा के लिये कोई उनके नजदीक न जा सके ऐसी व्यवस्था ट्रेन, बस, शौचालय आदि बहुत जगह होती है वैसे ही सर्वत्र स्त्रियों के लिये पुरुषों से अलग व्यवस्था निर्माण की जाएगी तो ही स्त्रियों की सुरक्षा संभव है। जैसे जैनधर्म में साधु-साध्वीजी की व्यवस्था अलग-अलग होती है। उनके रुकने के स्थान भी अलग होते हैं। वैसे स्कूल-कॉलेज-जॉब आदि समस्त जगहों पर स्त्रियों को पुरुषों से दूर रखा जाएगा तो ही वे सुरक्षित रह सकेगी। क्योंकि बारूद और चिनगारी- दोनो को नजदीक लाने के बाद विस्फोट न हो तो ही बडा आश्चर्य। वैसे स्त्रियों के नजदीक आने के बाद और उनके उत्तेजक वस्त्र देखने के बाद पुरुष उन पर हमला न करे तो ही बडा आश्चर्य।

ऐसा न हो इसलिये ही हमारे यहाँ पर पहले घुंघट प्रथा थी । परंतु वर्तमान की स्त्रिया जितनी तेजी से इस घुंघट प्रथा का त्याग कर खुद के शरीर प्रदर्शन की स्पर्धा में आगे बढ़ रही है उतनी ही तेजी से उनके शरीरों पर बलात्कार

और हमले भी बढ़ रहे है । रेप को अटकाने के लिये सरकार चाहे जितने सख्त कानुन क्यों न बना दे पर जब एकांत मिलता है तब कोई कानुन याद नहीं आता क्योंकि यह चीज ही ऐसी है । जो वस्तु जितनी मुल्यवान होती है उसे उतनी ज्यादा सुरक्षा देनी पडती है। हमारे आभूषणों को हम तिजोरी में रखते हैं क्योंकि हमें पता है कि रोड़ पर रखेंगे तो उन्हें कोई लूटकर ले जाएगा तो जो आभूषणों का भी आभूषण है ऐसे हमारे घर की बहनों को हम जाहिर स्थलों में जाने की, दिन-रात बाहर भटकने की छुट देंगे तो समझ जाना कि अब उनके साथ किसी भी समय कुछ भी हो सकता है क्योंकि आपने उन्हें ऐसे भूखे भेडियो के बीच में भेजा है जिन्हें उनको अच्छी तरह फंसाना भी आता है और उनके शरीरों को अच्छी तरह नोचना भी आता है।

जैसे जो विज्ञापन बार-बार दिखाया जाता है उसमे जो वस्तु होती है उसे लेने का मन होता है वैसे ही उस विज्ञापन के साथ बार-बार स्त्रियों को भी दिखाया जाता है। मूवी हो या सीरीयल, न्युज पेपर हो या होर्डिंग-चारो तरफ स्त्रियों के सुंदर शरीरों को परोसा जा रहा है। अब जो बार बार यहीं देखेगा तो उसे इन सुंदर स्त्रियों के प्रति आकर्षण बढ़ेगा। फिर जो नज़दीक में होगी उसे पाने का प्रयत्न बढ़ेगा। अगर सीधे तरीके से हाथ में ना आए तो जबरदस्ती करने का मन होगा। जिसे हम रेप कहते हैं। और रेप के बाद अगर वह जीवित रह गई और **FIR** करवा दी तो खुद को फांसी हो जाएगी। ऐसा ना हो इसलिये उस स्त्री का मर्डर भी होगा। क्योंकि ना रहेगा बांस, ना बजेगी बांसुरी। इसलिये अगर हमें स्त्रियों को सुरक्षित करना हो तो जो भी उनके शरीरों को बाजारू वस्तु की तरह परोस रहा है, ऐसे सभी व्यक्तियों को पकड़कर सजा देनी चाहिये । पर वर्तमान में ठीक इसका उल्टा हो रहा है।

T.V. मोबाइल के अंदर स्त्रियों के अभद्र दृष्य देखकर जो स्त्रियों के साथ गलत कर रहा है उसे तो फांसी दी जा रही है पर जो ऐसे दृष्य पूरे समाज

को दिखा रहा है वह करोडों रुपये कमा रहा है। जैसे किसी का मर्डर करनेवाले और करवानेवाले इन दोंनो को सरकार समान सजा देती है। वैसे ही जिसने स्त्रियों के साथ कुछ गलत किया उसे और जो स्त्रियों के अर्धनग्न दृश्य दिखाकर ऐसा करने के लिये उत्तेजित कर रहा है इन दोनो को समान सजा क्यों नहीं ? यह सरकार से कोई तो पुछों ।

यहाँ पर जो समाधान बताया गया है वह थोडा अशक्य जैसा लगेगा परंतु जब तक किसी भी समस्या के मूल तक पहुंचकर इलाज नहीं किया जाएगा तब तक वह समस्या कभी नहीं मिटेगी । सार इतना ही है कि जैसे प्राचीन भारत में लड़के-लड़कियों के गुरुकुल अलग होते थे वैसे स्त्रियों को अगर सुरक्षित करना हो तो उनकी सारी व्यवस्थाएं अलग करनी ही पड़ेगी।

4

विश्वशांति का अनमोल उपाय

प्रश्न : वर्तमान में समग्र विश्व विभिन्न प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त है। २ साल के बच्चे से लेकर १२० साल के बुजुर्ग तक सबके सब टेंशन-डिप्रेशन की आग में जल रहे है। मन अशांत होने के कारण जीवन भी अशांत बनता जा रहा है। जिसके परिणाम स्वरूप अपराध और आत्महत्याएं बढ़ती ही जा रही है। क्या है कोई इसका समाधान?

उत्तर : दुर्जनों की सक्रियता और सज्जनों की निष्क्रियता ही समस्त समस्याओं का मूल कारण है। दुर्जन भले ही १० है और सज्जन १० हजार है पर वे १० दुर्जन १० हजार सज्जनों पर भारी पड रहे है क्योंकि वे १० संघठित है। और सज्जन १० हजार होते हुए भी डर-डर कर जी रहे है क्योंकि सब अलग-अलग घुम रहे है। कोई एक-दूसरे के साथ बैठने तैयार नहीं है। सबकी यहीं मान्यता है कि, हम क्यों झुके ? जिसे गरज होगी वह सामने से झुकता आएगा। और इसी अहंकार के कारण खुद बहुमती में होने के बावजूद भी संकट में है।

समस्याओं को अगर कम करना हो तो दुर्जनों को सज्जन बनाना पड़ेगा । जो सज्जन है उन्हें संघठित करना पड़ेगा। जो संघठित है उन्हें सक्रिय करना पड़ेगा। और जो सक्रिय है उनकी संख्या जितनी ज्यादा बढ़ेगी उतनी ही ज्यादा विश्व में समस्याएं कम होने लगेगी। जैसे खुद के घर को संभालना हमारा कर्तव्य है, वैसे समाज सुरक्षा भी हमारा ही कर्तव्य है। क्योंकि समाज ही अगर असुरक्षित हो गया तो हमारा घर भी सुरक्षित कैसे रहेगा ?

जैसे देश को सुरक्षित रखने के लिये कोई भी सरकार सबसे ज्यादा खर्च डिफेंस पर करती है

वैसे हम भी हमारा दान भविष्य की सुरक्षा के लिये ही सबसे ज्यादा देंगे तो ही हमारे तीर्थ-समाज, परंपरा व व्यवस्थाएं सुरक्षित रहेगी।

जिसके पास ऐसी दवा हो कि जिसके द्वारा करोडों लोगो को मरने से बचाया जा सके ऐसा व्यक्ति एकांत में जाकर छुप जाए और अपनी दवा किसी को बताए ही नहीं तो उसे करोडों लोगों को मारने का पाप लगेगा या नहीं?

वैसे ही हमारे पास भी भगवान महावीर ने बताए हुए ऐसे सिद्धांत है, ऐसी जीवनशैली है, ऐसी आहार व्यवस्था है कि जिसका अगर हमने व्यवस्थित प्रचार किया तो १ रु. का भी प्रलोभन दिये बिना करोडों लोग हमारे जैन धर्म को अपनाने के लिये सामने से पुछने आएंगे।

हमें तो मात्र पोस्टमेन की तरह प्रभु के सिद्धांतों को आकर्षक पेकिंग के साथ जन-जन तक पहुंचाना है।

जो समग्र विश्व को शांत कर सके ऐसी विशिष्ट जीवनशैली विश्व के १-१ बच्चें तक पहुंचाने के बदले अगर हम उसे अपने उपाश्रयों और ज्ञान भंडारों तक ही सीमित रखेंगे तो समग्र विश्व में जितनी भी अव्यवस्थाएं और नित नयी समस्याएं खड़ी हो रही है, उसका पाप हमें लगेगा या नहीं? क्योंकि हमारी उपेक्षा के कारण ही यह सब हो रहा है।

जैसे पशु कतलखाने न पहुंच जाए इसलिये हमने पांजरापोल शुरू करवायी वैसे रोज के सैकडो लोगों को आत्महत्या से बचाना भी हमारा कर्तव्य है या नहीं?

जैसे जगद्गुरु श्री हीरसूरीश्वरजी म.सा. ने अकबर के समय में संपूर्ण भारतवर्ष में वर्ष में ६ महिने जीवदया का पालन करवाया था।

जैसे संप्रति महाराजा ने धर्म प्राप्ति के साथ ही समग्र विश्व में जैन धर्म का प्रचार करवाया और समग्र विश्व में शांति का झंडा लहराया था । जैसे कुमारपाल महाराजा ने सत्ता के बल पर अठारह देशों में जीवहिंसा को अटकाकर अहिंसा का झंडा फहराया था । वैसे हम भी हमारे प्रभुवीर के विश्वशांतिकारक सिद्धांतों को विश्व के कोने-कोने तक पहुंचाएंगे तो ही वर्तमान विश्व को भविष्य में आनेवाले विनाश के महातांडव से बचाया जा सकेगा।

भारत देश में सबसे ज्यादा टेक्स भरने वाले, सबसे ज्यादा दान देने वाले व और सबसे कम जैल में जाने वाले कोई हो तो वे है-जैन। इसका अर्थ यह हुआ कि जो जैन धर्म को आत्मसात करता है उसकी समृद्धि की संभावना बहुत बढ जाती है और उसके जीवन में अपराधिक गतिविधियां बहुत ही घट जाती है। यहीं तो आज विश्व का हर व्यक्ति चाहता है। विश्व की इस डिमांड को पूर्ण करने के लिये भी हमें कमर कसनी ही पड़ेगी।

वर्तमान में जैनधर्म के अंतर्गत साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाओं को मिलाकर प्रायः ५ हजार जितने उपदेशक है जिन्होंने अपने उपदेशों और आचरण के द्वारा ५० लाख लोगों को जैन धर्म में टिकाकर रखा है। यहीं काम अगर ५ लाख लोग करना शुरु कर दे तो जैनों की संख्या सीधी ५० करोड तक पहुंच जाएगी और जैनों की संख्या जितनी बढ़ेगी उतनी ही विश्व में शांति व समृद्धि बढ़ेगी।

अब यहाँ प्रश्न ये खड़ा होगा कि जैनों की संख्या को ५० करोड तक पहुंचाने के लिये ५ लाख उपदेशक लाए कहाँ से ?

तो उसका उत्तर यह है कि प्रत्येक जैन संघ में प्रवचन होल तो होते ही है। वहाँ प्रतिदिन किसी भी समय १ घंटे के लिये पब्लिक स्पिकिंग का कोर्स करवाना चाहिये। इसके लिये **Telegram app** में **Speech Power Workshop** नाम के चैनल में १०० से ज्यादा ऐसे विडीयो उपलब्ध है जिनकी मात्र नकल भी सबके बीच में खडे होकर करे तो थोडे ही समय में हम अच्छे वक्ता बन जाएंगे। एक बार 'कैसे बोलना?' उसका कोर्स हो जाए उसके बाद 'क्या बोलना?'उस विषय पर अपना ध्यान केंद्रित करें। इसके लिये अपनी जैन पुस्तके, उपाश्रय में चलनेवाले प्रवचन तथा सोशीयल मीडीया पर रखे हुए जैन प्रवचनों के द्वारा पूर्व तैयारी करवाए। प्रतिदिन ८-१० व्यक्ति को बोलने का चान्स दें । हर व्यक्ति का हफ्ते में एक बार नंबर लगाएं । जो अच्छा बोले उसे विशिष्ट इनाम दें और इनाम इतने जोरदार रखे कि बोलने वालों की भीड़ लग जाए, ऐसी व्यवस्था खड़ी करनी चाहिये । जो बहुत जोरदार बोलते हो - उन्हें विभिन्न शहरों तथा गावों में विभिन्न प्रसंगो पर बोलने के लिए भेजना चाहिये तथा उनके विडीयो बनाकर सोशीयल मिडीया पर वायरल करवाने चाहिये। जिसको जो भाषा आती हो उस भाषा में विडीयो

बनाकर उस भाषा को जानने वाले वर्ग में उस विडीयो को भीजवाना चाहिये। ऐसा करने से करोडों लोगों को वास्तविक जीवनशैली के बारे में पता चलने लगेगा।

और जैसे-जैसे वे इस विशिष्ट जीवनशैली को अपनाने लगेंगे वैसे-वैसे ही उनके जीवन की समस्याएं कम होने लगेगी और उन्हें परम शांति का अनुभव भी होने लगेगा।

ये तो हमने वक्तृत्व कला के द्वारा होने वाले आध्यात्मिक लाभ की बात की परंतु इसे सीखने के बाद जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भी सफलता की संभावना बहुत ही बढ़ जाती है। आज हमारे **P.M. नरेंद्रभाई मोदीजी** भी अपनी वक्तृत्व कला के कारण ही देश की सर्वोच्च सीट पर बैठे हुए है।

हमें अगर हमारे देश को और विश्व को साफ होने से बचाना हो तो उसका एकमात्र उपाय यहीं है कि जिसमें शक्ति हो-बुद्धि हो और देश की प्रजा को सुरक्षित रख सके ऐसे विशिष्ट सज्जनों को आजीवन के लिये सत्ता सौपनी पड़ेगी। जैसे बडी-बडी कंपनीयों में हर ५-५ वर्ष में **C.E.O.** नही बदलते वैसे देश को भी सुरक्षित रखना हो तो जो भारत को वापस विश्वगुरु और सोने की चीड़िया बना सके ऐसे योग्य व्यक्ति के हाथ में सत्ता के सूत्र देने पड़ेंगे।

उसके लिये पहले सज्जनों को इतना सक्षम बनाना पड़ेगा कि सुभाषचंद्र बोस की तरह जिनकी १ आवाज पर पूरा देश खड़ा हो जाए और देश में क्रांति हो जाए । और यह सब भी हमने २-३ वर्षों में नहीं किया तो आगे हम कुछ कर सके ऐसी स्थिति में भी नहीं रहेंगे।

पर इन सबके लिये धर्म को वफादार, धर्म के जानकार, अत्यंत समझदार और जरूरत पड़ने पर खुद का बलिदान देने भी तैयार हो जाए ऐसे हजारों वक्ताओं की फौज खड़ी करनी पड़ेगी। इस विषय में हम जितनी देरी करेंगे उतनी ही समस्या बढ़ती ही जाएगी यह निश्चित है।

इस विषय में आपका क्या मानना है ? आप हमें किस प्रकार से सहयोग कर सकते है और हमारी यह लेखमाला आपको कैसी लगी? वह हमें अवश्य बताएं ।

5

वर्तमान समस्याओं का मूल कारण और उसका सचोट समाधान

प्रश्न : वर्तमान में चारो तरफ समस्याएं ही समस्याएं दिखती जा रही है। प्रत्येक व्यक्ति अंदर से अशांत है। समाज और विश्व को कैसे शांत करे उसका कोई उपाय नहीं दिख रहा है। क्या है कोई इसका समाधान ?

उत्तर : दुनिया में दुःखी ज्यादा है और सुखी कम । दुःखी ज्यादा है क्योंकि दूसरों को दुःख देनेवाले ज्यादा है और सुखी कम है क्योंकि दूसरों को सुखी करने वाले कम है। इसका अर्थ यह हुआ कि दूसरों को जो जितना ज्यादा दुःख देगा भविष्य में वह उतना ज्यादा दुःख पाएगा और दूसरों को जो जितना ज्यादा सुख देगा वह उतना ज्यादा सुख पाएगा।

विश्व को अगर सुखी बनाना हो तो एज्युकेशन सिस्टम इस प्रकार से डिजाइन करना पड़ेगा कि जिसके द्वारा हर व्यक्ति दूसरे को सुखी करने का व्यसनी बने । दूसरे के सुख में ही खुद का सुख माने। दूसरे के दुःख में खुद दुःखी-दुःखी हो जाए। जब तक दूसरों का दुःख दूर न हो तब तक खुद शांति से ना सो सके।

वर्तमान विश्व में जो अराजकता है उसका मुख्य कारण है- स्वार्थ । हर व्यक्ति को स्वार्थी बनने की स्पेश्यल ट्रेनिंग दी जा रही है। इस प्रकार की ट्रेनिंग जहाँ २०-२० साल तक दी जाती है उस स्थान को हम हमारी स्कूल-कॉलेज कहते हैं। क्योंकि इस एज्युकेशन सिस्टम में बच्चों को एक ऐसी रेस में दौडाया जाता है जिसमें सबका एक ही लक्ष्य होता है कि 'मुझे नंबर वन आना है।' चाहे उसके लिए नकल मारनी पडे, पेपर फोड़ना पडे, या कुछ भी अनैतिक करना पड़े। पर बच्चे के दिमाग में बैठा दिया जाता है कि अगर तुम रट्टा मारने में टॉप पर रहोंगे तो ही तुम्हारी किंमत है। तो ही तुम्हारे फोटो छपेंगे। तो ही समाज तुम्हे धन्यवाद देगा । जिसकी स्मरणशक्ति कमजोर है और जो इस रेस में दौड नहीं पाते, उन सबको तो यही लगता है कि हमारा जीवन तो व्यर्थ ही है। परिणाम स्वरूप कितने ही बच्चे आत्महत्या कर रहे हैं। भले

ही उनमें सचिन तेंदुलकर की तरह दूसरी अनेक विशेषता है पर उसे कैसे बाहर लानी उस पर किसीका ध्यान ही नहीं है। जंगल में सैकडो पशु-पक्षी रहते हैं, पर उनके बीच अगर स्पर्धा लगा दी जाए कि जो नारीयल के पेड पर चढ़ सकेंगे वे ही पास और बाकी सब फैल । तो उसमे आधे से ज्यादा फैल होने ही वाले है। वैसे ही वर्तमान एज्युकेशन सिस्टम में भी यहीं खेल चल रहा है कि जिसको ज्यादा याद रहेगा वे सब हीरो और बाकी सब जीरो । हकीकत में होना यह चाहिये कि जिसमें जो विशेषता है उसमें उसे आगे कैसे बढाया जाए । जैसे अर्जुन धनुर्विद्या में, भीम गदा चलाने में नंबर वन था । उसके बदले हो ये रहा है कि जिसमें जो जन्मजात विशेषता है वह भी साफ होती जा रही है क्योंकि उसे बाहर आने का कोई चान्स ही नहीं मिल रहा है। इस चक्कर में खुद को जो नंबर वन पर ला सके ऐसा टेलेंट खुद में ना होने के कारण

वह बच्चा बड़ा होने पर धीरे धीरे अलग ही रास्ता अपनाता है। समाज में नंबर वन आने के चक्कर में वह पैसे के पीछे दौडना चालु करता है। साम-दाम-दंड-भेद किसी भी प्रकार से पैसा बढाने का प्रयत्न करता है। उसके लिए अनैतिक रस्ते भी अपनाता है। ऐसी सिस्टम का निर्माण करता है कि जिसके फलस्वरूप समाज के ९५%. लोगों का धन मात्र ५% लोगों के पास खींचा चला आता है। इस सिस्टम के कारण जो गरीब बनता है वह अपने पेट की भूख शांत करने या तो चोरी आदि अपराध करने लगता है या फिर आत्महत्या कर लेता है।

यहाँ पर सबसे बड़ा सवाल यह खड़ा होता है कि जो दूसरों की दुकानों में चोरी करे उसे पकड़कर जेल में बंद किया जाता है तो जो दूसरों की दुकाने बंद ही करवा दे, ऐसी सिस्टम को प्रमोट करनेवाली इस एज्युकेशन सिस्टम को कौन बंद करवाएगा?

जो किसी को मरने के लिये मजबुर करे उसे भी गुनहगार गिना जाता है तो टेक्नोलोजी का विकास करवाकर जो करोडो लोगों को मरने के लिए मजबूर कर रही है ऐसी शिक्षा व्यवस्था क्या गुनहगार नहीं है? समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अगर सुखी बनाना हो तो प्रत्येक व्यक्ति इज्जत की रोटी कमा सके ऐसी सुव्यवस्था का निर्माण करना पडेगा। और उसके लिए 'मुझे फर्स्ट आना है' इस नीति को छोडकर 'मुझे सबको फर्स्ट बनाना है।' इस नीति वाला शिक्षण देना पड़ेगा। क्योंकि जब तक स्वार्थवृति कम नहीं होगी तब तक समाज में समस्याएं खडी की खड़ी रहेगी। इस विषय में आपकी क्या राय है और आपको हमारी बात कैसी लगी ये हमें अवश्य बताइएगा ।

6 जिनशासन को विश्वशासन बनाना हो तो अपनी पाठ्शालाओं में कौनसा परिवर्तन करना पड़ेगा ?

प्रश्न : वर्तमान में ज्यादातर पाठशाला ओक्सीजन पर चल रही है । १३-१४ वर्ष के होते ही ज्यादातर बच्चें पाठशाला आना बंद कर देते हैं। जो पाठशाला में पढे हुए बच्चे है वे भी जैन धर्म के अनुष्ठानों में बहुत कम ही दिखाई देते है । धर्म के प्रति वफादारी घटती जा रही है। **क्या है कोई इसका समाधान ?**

उत्तर : हमारी भावी पीढी को अगर धर्मप्रेमी और शासन के लिये अपना बलिदान देना पडे तो भी तैयार हो जाय इतनी वफादार बनानी हो तो उनके रक्त के अणु-अणु में जिनशासन को बसाना पड़ेगा और इसके लिए सर्वप्रथम हमारी पाठशालाओं को संस्कारशाला बनानी पडेगी। मात्र पाँच प्रतिक्रमण रटने वाले नहीं पर जरूरत पड़े तो पाँच जगह पर अतिक्रमण से रक्षण करनेवाले श्रावकों की फौज खड़ी हो ऐसा आयोजन करना पडेगा। जैसे कुमारपाल और संप्रति महाराजा ने कितने ही देशों पर विजय पाकर वहाँ पर आहिंसा का झंडा फहराया और प्रजा को निश्चिंत बनाया ।

वर्तमान के बच्चों को मात्र सूत्र नहीं परंतु शासन के प्रति मेरा कर्तव्य क्या है ? वह भी याद करवाना पड़ेगा क्योंकि पाँच प्रतिक्रमण सूत्र याद करने के बाद भी वे अगर अपने संघ के अनुष्ठानों में दिखते ना हो और अपने सिवाय बाकी समस्त धर्म के फंक्शन में पहुंच जाते हो तो हमें समझ जाना चाहिये कि हम उन्हें श्रावक नहीं पर कुछ और ही बना रहे है।

अपने बच्चों को अपने धर्म के वफादार बनाना हो तो अपनी पाठशालाओं में निम्नलिखित बदलाव करने पड़ेंगे।

१) रोज सबको **Fix** टाइम पर एक साथ में आने को कहे तथा सभी आ जाने के बाद रोज आधा घंटा स्टोरी सेशन चले जिसमें अपने महापुरूषों का जीवन चरित्र हो और जिसके द्वारा बच्चों में विनय, विवेक, नम्रता-शूरवीरता, नीतिमत्ता, प्रामाणिकता आदि सद्गुणों की वृद्धि हो ऐसी कहानियां सुनाएं क्योंकि जो प्रजा अपने इतिहास को भूल जाती है वह खुद भी इतिहास बन जाती है। आज के बच्चों को वर्तमान के एक्टर-क्रिकेटरों के नाम तो बहुत सारे पता होंगे पर उन्हें अपने महापुरुषों के बारे में पूछा जाए तो बगले झाँकने लगेंगे।

२) जो बच्चें अच्छी तरह स्टोरी बोल सके उनके पास ही स्टोरी बुलवाए। इसके द्वारा धीरे-धीरे उनके अंदर पब्लीक स्पिकिंग की स्कील डॅवलोप होने लगेगी। जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अत्यंत उपयोगी बनेगी।

३) स्टोरी के साथ-साथ पर्युषण के प्रवचन - शिबिर-तत्त्वज्ञान-भावयात्रा-संवेदना आदि विषयों पर भी तैयारी करवाएं ताकी आगे जाकर वे किसी भी विषय पर हजारों के बीच में १-२ घंटा बोल सके इतने तैयार हो जाए।

४) अपने आसपास में जो बडी-बडी हस्तिया हो और जो बहुत लोकप्रीय हो उन्हें आमंत्रण देकर बुलाएं और वे अपने जीवन में कैसे आगे बढे? इस विषय पर उनका वक्तृत्व रखवाएं। इसके द्वारा बचपन से ही बच्चों को जीवन में सफलता प्राप्त करने के सिद्धांत पता चलने लगेंगे।

५) जब कोई अच्छे प्रवचनकार साधु-साध्वीजी भगवंत अपने संघ में पधारे हो तो पाठशाला के समय में ही उनके पास बच्चों की शिबिर रखवाएं। महात्मा के संपर्क में बच्चे जितने ज्यादा आएंगे उतने ही ज्यादा वे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढेंगे।

६) जो बच्चे साधु म.सा. के प्रवचन में सुबह के समय पर हाजीर हो उन्हें भी विशेष प्रभावना दे । क्योंकि जो हफ्ते में १ दिन ५ मिनिट के लिये पूजा करने आते है उन्हें भी बहुत संघों में विशिष्ट गिफ्ट दी जाती है, तो

जो १-१ घंटे तक प्रवचन में बैठे उनका बहुमान तो खास करना चाहिये।

७) जो लड़का नये लड़के को लेकर आए और उसे टिकाकर रखे उसका भी विशेष बहुमान करें ।

८) चौदस के दिन शाम को प्रतिक्रमण में जो-जो बच्चे १ भी गलती बिना सूत्र बोले उनका भी विशेष बहुमान करे।

९) रोज-रोज प्रभावना देने के बदले सूत्र पर स्किम रखे। जैसे कि-दो प्रतिक्रमण भूल बिना सुनाए तो २ हजार । पांच प्रतिक्रमण पूरा सुनाए तो पाँच हजार, नवकार से नवस्मरण तक भूल बिना सुनाए तो ९ हजार का इनाम। इस प्रकार मात्र १६ हजार में पाँच प्रतिक्रमण और नवस्मरण पूरा हो जाएगा। और बाद में भी जीवविचार आदि जितने भी ग्रंथ अर्थ के साथ करे तो प्रत्येक ग्रन्थ पर ५-५ हजार का इनाम रखें। ऐसा करने से मात्र १ लाख रु. में जैन शासन के जानकार हो ऐसे विशिष्ट विद्वानों का निर्माण होगा।

१०) जिनशासन के समस्त मुख्य-मुख्य विषय आ जाए ऐसी १०० जितनी पुस्तकों पर ओरल एक्जाम का आयोजन करे। प्रत्येक पुस्तक में से १० प्रश्न पुछे। जो जितने जवाब दे उतने सौ रुपये का उसे इनाम दे।

११) डीजीटल ऑडियो-विडियो कंटेंट भी अब उपलब्ध है । उसका भी उपयोग किया जा सकता है ।

१२) अपने बच्चों को चाणक्य जैसा बुद्धिशाली बनाना हो तो **9427966227** नंबर पर **send link** मेसेज **whatsapp** से भेंजे । ग्रुप **Join** करके जो **post** आए वे उन्हे खास दिखाएं ।

जिनशासन को विश्वशासन बनाना हो तो यहाँ पर जो उपाय बताए गए है उन पर ज्यादा से ज्यादा अमल करें ।

7

भारत को वापस विश्वगुरु और सोने की चीड़िया बनाना हो तो एज्युकेशन सिस्टम कैसा होना चाहिये ?

प्रश्न : शिक्षण वह जीवन की आधारशीला है । वह अगर मजबुत ना हो तो जीवनभर दुःखी होना पडता है । वर्तमान में जितनी भी समस्याएं है उसमें से ज्यादातर वर्तमान की विचित्र शिक्षण व्यवस्था के कारण खड़ी हुई है । जिसके फलस्वरूप आज पूरा भारत महाभारत का रणमैदान बना हुआ है । भारत को अगर वापस विश्वगुरू और सोने की चीड़िया बनाना हो तो वास्तव में कैसा शिक्षण देना चाहिये ?

उत्तर : कोई जन्म से ही अरबोपति के घर में पैदा होता है और कोई आजीवन मेहनत करने के बाद भी गरीब का गरीब ही रहता है । इसके पीछे कोई तो कारण होगा । हमारे भारतीय शास्त्रों में इसके लिए पुण्य और पाप शब्द का उल्लेख आता है । जिसका पुण्य का उदय चल रहा हो वह बिना मेहनत के भी रातोरात अमीर बन जाता है और जिसका पाप का उदय चल रहा हो वह रातोरात करोड़पति में से रोड़पति बन जाता है । इसका अर्थ यह हुआ कि जो जितना ज्यादा पाप करता है वह भविष्य में उतना ज्यादा दुःखी बनता है और जो जितना ज्यादा पुण्य करता है वह भविष्य में उतना ज्यादा सुखी बनता है । नास्तिक हो या आस्तिक, हिंदु हो या मुस्लिम । दुःख किसी को पसंद नहीं है। पर जब तक हम हमारे पाप बंद नहीं करेंगे तब तक हमारे जीवन में दुःख आते ही रहेंगे । इसलिए व्यक्ति को अगर सुखी करना ही हो तो उसे ऐसा शिक्षण देना चाहिए कि जिसे लेने के बाद वह कम से कम पाप करें । जीवन में जो बिनजरूरी पाप है वे सब पाप तो बंद ही कर दें। इसका मतलब यह हुआ कि जो जितना कम पाप करता है वह उतना

ज्यादा एज्युकेटेड है क्योंकि वही भविष्य में उतना कम दुःखी होगा।

मात्र डीग्रीया बढ़ती जाए वह एज्युकेशन नहीं है पर व्यक्ति अपने जीवन में आनेवाले दुःख के कारणों को पहचान सके और उन दुःख के कारणों का त्याग करता जाए वहीं वास्तविक एज्युकेशन है । जब एज्युकेशन का उद्देश्य ही व्यक्ति को सुखी करना है तो वहीं एज्युकेशन देना चाहिये जो उसे पापों से दूर रखे और वास्तव में सुखी बनाए । कम से कम पाप द्वारा ज्यादा से ज्यादा अहिंसक जीवन कैसे जीया जाए ऐसे एज्युकेशन को ही 'जैन धर्म' कहा जाता है। 'हमें जो पसंद नहीं है वैसा व्यवहार हमें भी किसी के साथ नहीं करना चाहिये' यह सबसे पहला धर्म है। कोई हमें मारे, हमारे साथ झूठ बोले, हमारी वस्तुएं उठा ले, हमारी माँ-बहनों के साथ गलत करे तो हमें पसंद नहीं आता तो हमें भी ये समस्त हरकतें कभी किसी के साथ नहीं करनी चाहिये। और जैसे इन्सानों को दुःखी नहीं करना है वैसे पशु-पक्षी और जीवमात्र को भी दुःखी नही करना है क्योंकि शरीर भले विभिन्न आकार के हो पर वेदना तो सबको समान ही होती है। और हम जितनी ज्यादा वेदना दूसरों को देंगे उतनी ही ज्यादा वेदना हमें भी सहन करनी पडेगी। इन समस्त बातों का सार इतना ही है कि भारत को वापस विश्वगुरु और सोने की चीडिया बनाना हो तो जो पाप से डरना सीखाए ऐसी जैन धर्म की पुस्तकों पर आधारित शिक्षण व्यवस्था खड़ी करनी पड़ेगी । आप भी अगर अपने सुपुत्रों को ऐसा विशिष्ट शिक्षण देना चाहते हैं तो अवश्य संपर्क करें...

8 क्या भारत जैसे अपने आर्य देश को छोड़कर धन के लिए अनार्य देशों में जाकर रहना चाहिये ?

प्रश्न : आज जिसे देखो वह देश छोड़कर भागने की तैयारी कर रहा है। जिस स्पीड से अपनी प्रजा अन्य देशों की तरफ दौड़ रही है उसे देखकर ऐसा लगता है कि कुछ वर्ष बाद अपने ही देश में अपने लोग दिखेंगे भी या नही यह बहुत बड़ा सवाल है। अपनी प्रजा को अपने देश का आकर्षण जगे इसके लिए है कोई उपाय ?

उत्तर : कुछ वर्षों पूर्व परदेश की धरती पर पैर रखना भी पाप माना जाता था। वीरचंद राघवजी गांधी परदेश से जब धर्म प्रचार करके वापस आए तब यहां के लोगों ने उनके इस कार्य की कोई अनुमोदना नहीं की इसलिए उन्हें बहुत आघात लगा और वे छोटी उम्र में ही चल बसे। परदेश जाना पाप क्यों? इसका कारण पकडने जाए तो इतना समझ में आता है कि अनादिकाल से आत्मा पर भोग के संस्कार तो पड़े हुए ही है। उसमें भी जहाँ पर भोगवाद अपनी चरम सीमा पर हो ऐसे स्थानों में अपनी इंद्रियों को वश में रखना वह स्थूलभद्र स्वामी जैसे विरलों के लिये ही संभव है, क्योंकि आत्मा निमित्तवासी है। हम जैसे वातावरण में रहेंगे वैसा ही करने का मन होगा। तो जहाँ पर सुरा-सुंदरी-संपत्ति-सप्त व्यसन की रेलमछेल हो; विवेक गैरहाजीर हो, उत्तेजक निमित्त मिलते हो वहाँ पर अपनी पवित्रता-ब्रह्मचर्य को टिकाना असंभव जैसा है । परदेश में नसीब और पुरुषार्थ के बल पर पैसा तो मिल जाएगा पर अपनी आनेवाली पीढी में विनय-विवेक-नम्रता-सदाचार-अभक्ष्य त्याग-ब्रह्मचर्य-पवित्रता आदि आत्मिक गुण कितने टिकेंगे यह प्रश्नचिन्ह है।

परिवार के संस्कार बिगड ना जाए इसलिए भारत में भी हम रेडलाइट एरीये के नजदीक अपना घर नहीं लेते तो फिर जहाँ पर दूराचार- व्यभिचार-

सप्त व्यसन सामान्य बात है ऐसे देशों में हम कैसे जा सकते हैं?

जिसे दीक्षा देनी हो उसमें जो १६ गुण होने चाहिये उसमें १ गुण है - आर्य देश उत्पन्न । क्योंकि विशिष्ट संस्कारी आत्मा को ही भारत जैसे आर्य देश में जन्म मिलता है। वर्तमान में जितनी भी दीक्षाए हो रही है उसमें भी ९९.९९% भारत में जन्म लेनेवालों की ही हो रही है क्योंकि बाहर ऐसा कोई वातावरण ही नहीं है कि जिसके कारण दीक्षा के भाव जगे। शास्त्रों के अनुसार हम जिस भरतक्षेत्र में रहते हैं उसमें ३२ हजार देश है उसमें भी मात्र साढे पच्चीस देश ही आर्य देश है अर्थात् १ हजार के सामने १ देश का अनुपात भी पूरा नहीं आ रहा है । अर्थात् जिसके पुण्य का उदय चल रहा हो उसे ही आर्य देश में जन्म मिलता है पर जिसके पाप का उदय चल रहा हो उसे ही आर्य देश छोड़कर अनार्य देश में रहने जाने का मन होता है । याद रखना - वर्तमान में हमें मानव जन्म-बुद्धि-आयुष्य-धन-संस्कारी परिवार आदि जो कुछ भी मिला है वह पीछले जन्मों में पैसे बहुत कमाये थे इसलिए नहीं मिला है परंतु पीछले जन्मों में दान-शील-तप-त्याग-शुभ भाव को बहुत टिकाया था इसलिए मिला है। भौतिक संपत्ति वह वास्तविक संपत्ति नहीं है क्योंकि वह तो महेमान जैसी है । कभी चली जाएगी कुछ कह नहीं सकते । आत्मिक संपत्ति ही वास्तविक संपत्ति है जो अपनी वफादार पत्नी जैसी है। जो मात्र इस जन्म में नहीं पर श्रीपाल महाराजा की तरह जब तक मोक्ष ना हो तब तक सब कुछ दिलाने की जवाबदारी लेने तैयार है। समस्त बातों का सार इतना ही है कि जहाँ ना संयुक्त परिवार व्यवस्था है-ना प्राचिन तीर्थ है-ना गुरु भगवंतों का विचरण है- ना आर्य परंपराएं है- ना सद्‌गति की गेरंटी है ऐसे अनार्य देशों में महिने के करोड रु. भी मिलते हो तो भी नहीं जाना चाहिये क्योंकि कुमारपाल महाराजा नित्य प्रभु से प्रार्थना करते थे कि 'हे प्रभु! तेरा शासन ना मिलता हो ऐसा चक्रवर्ती का पद भी मुझे नहीं चाहिये पर तेरा शासन मिलता हो और भीखारी बनना पडे तो भी मुझे बहुत खुशी होगी। क्या हम भी ऐसी भावना नहीं रख सकते ?

9

धर्म के नाम पर कहीं आपको टाइमपास तो नहीं करवाया जा रहा है ?

प्रश्न :'जो सबको नजदीक लाए वह 'धर्म' – यह धर्म की वास्तविक व्याख्या है पर उसके बदले 'जो सबमें टुकड़े पड़वाए वह धर्म' यह धर्म की वर्तमान व्याख्या बन गयी है। धर्म के नाम पर सैंकड़ो प्रकार की भ्रांतिया फैलाई जा रही है। धर्म क्या है? धर्म क्यों करना चाहिए? कौनसा धर्म सच्चा ? ऐसे सवालों का है कोई जवाब ?

उत्तर : मरते दम तक दुःखी ना होना पड़े ऐसा जीवन जीए वह बुद्धिमान ऐसा नहीं है परंतु मरने के बाद भी दुःखी ना होना पड़े ऐसा जीवन जीए वह बुद्धिमान – और ऐसा जो जीवन है उसका ही नाम है 'धर्म'। हमें जो पसंद नहीं है ऐसा व्यवहार हमें भी कभी किसी से साथ नहीं करना–उसे कहते है 'धर्म' । हमें जो पसंद नहीं है उन समस्त दुःखों से जो हमें हंमेशा के लिए छुटकारा दिलवाए–उसे कहते है 'धर्म'। हमें जो पसंद है ऐसी परम शांत और आनंदमय अवस्था जो हमें हंमेशा के लिए प्राप्त करवाएं– उसे कहते है 'धर्म'। अनंतकाल से अनंत जन्म–मरण के चक्र में भटकती हमारी आत्मा को जो अनंत जन्म–मरण के चक्र से छुटकारा दिलवाए–उसे कहते है 'धर्म' । यहां पर सबसे बड़ा **सवाल** यह खड़ा होता है कि वह कौनसा 'धर्म' है जो हमारी आत्मा को परमात्मा बना दें? हमें प्रतिक्षण अनंत सुख का अनुभव करवाए? हमारे समस्त दुःखों से हमें हंमेशा के लिए छुटकारा दिलवाएं? तो उसका जवाब यह है कि जो–जो कार्य करने से संसार के पदार्थों के प्रति हमारा मोह घटता जाए, संसार के पदार्थों में सुख है ऐसी हमारी मान्यता घटती जाए, बिमारी में दवा की तरह जो एकदम जरूरी हो

उसका ही उपयोग चालु रहे और बाकी सब चीजों के सामने देखने का मन भी ना हो-ऐसी विशिष्ट त्यागमय जीवनशैली को ही वास्तव में 'धर्म' कहा जाता है। हमारी आत्मा निमित्तवासी है । हम जैसे वातावरण में रहेंगे, जैसा देखेंगे, जैसा सुनेंगे वैसा ही करने का मन होगा । फिर हम जैसा करेंगे वैसे संस्कार पड़ेंगे और जैसे संस्कार पड़ेंगे वैसे ही बार-बार अवतार मिलेंगे । मान लो कि खाने का बहुत शौक है और दिन-रात खाने के ही विचार आते हैं और खाने की ही प्रवृत्ति चलती रहेंगी तो संस्कार भी वैसे ही पड़ेंगे। परिणाम स्वरूप जहाँ पूरे दिन खाने की ही प्रवृत्ति चलती रहती है ऐसे बकरी आदि के ही अवतार मिलेंगे । इसलिए जो-जो प्रवृत्तियां हमारी आत्मा में अशुभ संस्कारों का नाश करती जाएं और शुभ संस्कारों को उत्पन्न करती जाएं उन समस्त प्रवृत्तियों को 'धर्म' कहा जाता है । हम पूरे दिन में झूठ तो कम ही बोलते हैं ज्यादातर तो सच ही बोलते हैं। क्रोध में कम ही रहते हैं ज्यादातर तो शांति से ही बातें करते हैं । अर्थात् ९०% तो हम सीधे ही हैं, ५-१०% ही उल्टे सीधे कार्य करते हैं । तो जो-जो प्रवृत्ति हमारी ५-१०% बुराइयों को ०% तक पहुंचा दें और हमारी ९०% अच्छाईयों को १००% तक पहुंचा दें उन समस्त प्रवृत्तियों को ही 'धर्म' कहते हैं । इन समस्त बातों का सार इतना ही है कि जो हमारी बुराईयों को हंमेशा के लिये समाप्त कर दें, हमारे समस्त दुःखों को हंमेशा के लिये खत्म कर दें, हमारी अनंत जन्म-मरण की परंपरा पर ब्रेक लगा दें, हमें प्रतिक्षण अनंत सुख का अनुभव करवाएं, ऐसी विशिष्ट जो जीवनशैली है उसे ही वास्तव में 'धर्म' कहा जाता है । आप भी अगर ऐसी विशिष्ट जीवनशैली अपनाना चाहते हैं तो अवश्य संपर्क करें । आपके मन में रहे हुए धर्म संबंधित किसी भी प्रकार के प्रश्न हो तो भी हमें अवश्य पुछवाएं ।

10

सावधान ! कहीं आप धर्म की रक्षा के बदले अधर्म की रक्षा करने तो नहीं बैठ गए ?

प्रश्न: वर्तमान में एक तरफ दीक्षाएं बढ़ती जा रही तो दूसरी तरफ दीक्षा के वेश में भी कुछ कर्मवश जीव दीक्षा के वेश को कलंक लगे ऐसे दुष्कार्य भी कर रहे हैं। अगर इन लोगों को नहीं रोका गया तो धर्म की भयंकर बदनामी हो सकती है। तो ऐसे गलत कार्य करनेवालों को जगत के समक्ष प्रकट करने का सत्कार्य करना चाहिये या नहीं?

उत्तर : आपके सवाल में ही आपका जवाब छुपा हुआ है। धर्म के वेश में जो गलत कार्य कर रहे हैं उन्हें इसलिये रोकना है ताकि धर्म की बदनामी ना हो तो धर्म के वेश में जो गलत कार्य कर रहे हैं उन्हें इस प्रकार से रोकना चाहिये कि धर्म की बदनामी ना हो। वर्तमान में ठीक उसका उल्टा चल रहा है। जो गलत कर रहे हैं उन्हें अटकाने की शक्ति तो किसी के पास है नही परंतु उनके गलत कार्यों के फोटो-विडीयो का प्रचार करवाकर धर्म की बदनामी भरपूर करवाई जा रही है ताकि जो थोडे बहुत श्रद्धावंत जीव है उनकी भी श्रद्धा समाप्त हो जाए और विश्व में अधर्म का साम्राज्य छा जाए।

* न्याय के अंदर भी नियम है कि १०० अपराधी छुट जाए तो चलेगा पर १ निर्दोष को सजा नहीं होनी चाहिये। जबकि वर्तमान में जो चल रहा है उसमें हो यह रहा है कि जो २-४ अपराधी है उनके अपराधों को दुनिया के समक्ष प्रकट करने के चक्कर में जो १५-२० हजार की सुविहित श्रमण संस्था है उनके पास किसी को जाने का मन ही ना हो ऐसे वातावरण का निर्माण किया जा रहा है।
* अमुक देशों में जो शासक होते हैं वे शासक कम और तानाशाह ज्यादा होते हैं । उनके विरुद्ध १ अक्षर भी कोई लिखता है या बोलता है तो वे उसे उसके खानदान के साथ साफ कर देते हैं । वैसे इस विश्व में जो थोड़ी

बहुत भी शांति दिखाई दे रही है उसका कारण है हमारे जिनशासन के सिद्धांत । एकाध जीव के कुकर्मों के नाम पर ऐसे त्रिलोकपूज्य जिनशासन पर से भव्य जीवों की श्रद्धा उठाने के कार्य में जो भी जाने-अनजाने शामिल हुए है उनकी भी हालत वैसी ही होगी जैसी हालत प्रभु वीर के जीव की हुई जब उन्होंने अपने तीसरे मरिची के भव में कपिल को यह उपदेश दिया कि धर्म यहाँ पर भी है और वहाँ पर भी है । शिष्य लोभ में आकर बोले गए असत्य वचनों के परिणाम स्वरूप खुद के असंख्य वर्षो का भव भ्रमण बढ़ा दिया । मात्र १ कपिल की धर्म श्रद्धा को भ्रष्ट करनेवाला अगर तीर्थंकर का जीव हो तो भी कर्मसत्ता उसे नहीं छोड़ती तो जो लाखों-करोड़ो लोगों की धर्मश्रद्धा हिल जाए ऐसा विशिष्ट सत्कार्य (?) कर रहे है उनकी क्या हालत होगी ? यह विचारणीय है।

* मान लो कि जो किसी की सुनता नहीं है, और अपने गलत आचरण के द्वारा धर्म की निंदा भी करवा रहा है तो अंत में उसका इलाज इस प्रकार से करना चाहिये जैसे इजरायल की मोसाद नाम की सिक्रेट एजेंसी करती है । जो इजरायल के शत्रुओं को उसके घर में जाकर इस प्रकार से साफ कर देती है कि किसी को पता भी नही चलता की ये सब कौन कर के गया। जिनशासन की निंदा अटकाने के लिए सभी प्रकार के उपाय अजमाने की छूट शास्त्रों में दी गयी है।
* होस्पीटल में जो भी प्रवेश लेते हैं वे ठीक होने के लिये लेते हैं। जो ठीक हो जाते है वे तो वहाँ से निकल जाते हैं। वैसे ही दीक्षा जो भी धारण कर रहे हैं वे खुद को सुधारने के लिये दीक्षा में आए है, सुधर गये वे तो सब मोक्ष में बैठे है। जब तक दर्दी होस्पीटल में होता है तब तक डाक्टर दर्दी ने जो गलती की हैं उसकी निंदा करने के बदले उसे ठीक कैसे किया जाए उसका प्रयत्न करता है वैसे दीक्षा लेने के बाद भी अगर कोई कुछ गलत कर ले तो दीक्षा धर्म बदनाम ना हो इस प्रकार से जो करना पड़े वह करें उसे कहते हैं बुद्धिमान और साधु के वेश में बैठे हुए किसी शैतान के कुकर्मो को विश्व में फैलाकर लोगों को सुसाधुओं पर से विश्वास ही उठ जाए वैसा कार्य करे वह मूर्ख । इस लेख में आपको क्या गलत लगा वह हमें अवश्य बताइएगा।

11

अगर अपने बच्चों को अत्यंत बुद्धिशाली बनाना हो तो ये रहा उसका उपाय ।

प्रश्न : वर्तमान में बच्चों की उंचाई और उम्र तो बढ रही है पर उनकी बुद्धि बढ़ रही हो ऐसा लगभग नहीं दिख रहा है । हमारे बच्चों की उम्र कम हो पर बचपन में भी पचपन जितना अनुभव और अक्कल प्राप्त कर सके उसके लिए क्या करना चाहिये ?

उत्तर : अगर आप अपने बच्चों को बचपन में ही पचपन जितना अनुभवी बनाना चाहते है तो उन्हे बचपन से ही संस्कृत भाषा का अभ्यास शुरु करवा दे । संस्कृत के ग्रंथों को आसानी से पढ़ सके ऐसा कोर्स करवाए । सैंकड़ो संस्कृत ग्रंथो का अभ्यास करवाएं।

आपके मन में प्रश्न खड़ा होगा कि संस्कृत सीखने से बुद्धि की वृद्धि का क्या कनेक्शन है । तो ये रहा उसका उत्तर ।

संस्कृत भाषा का अध्ययन और अभ्यास बुद्धि **(Intelligence),** स्मरण शक्ति **(Memory)** और तर्क शक्ति **(Reasoning-Ability)** को विकसित करने में बहुत सहायक होता है। इसके पीछे कई वैज्ञानिक और व्याकरणिक कारण हैं।

संस्कृत भाषा से बुद्धि कैसे बढ़ती है?

1. मस्तिष्क की सक्रियता बढ़ती है ।

संस्कृत पढ़ने और बोलने से मस्तिष्क के दोनों गोलार्द्ध **(Left Right Hemisphere)** सक्रिय होते हैं।

यह न्यूरोलॉजिकल कनेक्शनों **(Neural Connections)** को मजबूत करता है, जिससे सोचने और समस्याओं को हल करने की क्षमता बढ़ती है।

2. स्मरण शक्ति (Memory) में वृद्धि ।

संस्कृत भाषा में वाक्य संरचना **(Sentence Structure)** जटिल होती है, जिससे इसे सीखने पर मस्तिष्क की स्मरण शक्ति विकसित होती है।

शोधों में पाया गया है कि संस्कृत श्लोकों और मंत्रों का पाठ करने वाले विद्यार्थियों की याददास्त **(Memory Retention)** अन्य लोगों से बेहतर होती है।

3. ध्यान (Concentration) और एकाग्रता (Focus) बढ़ती है ।

संस्कृत में उच्चारण और व्याकरण नियमों का पालन करना ध्यान केंद्रित करने की क्षमता को सुधारता है।

संस्कृत के मंत्रों और श्लोकों के नियमित जाप से मानसिक शांति मिलती है और ध्यान शक्ति बढ़ती है।

4. तर्क शक्ति (Logical Thinking) को मजबूत करता है ।

संस्कृत भाषा का व्याकरण अत्यधिक वैज्ञानिक और गणितीय **(Mathematical)** आधार पर टिका हुआ है।

सिद्धहेम के व्याकरणिक नियम संगणक **(Computational Thinking)** और तार्किक शक्ति **(Logical Reasoning)** को बढ़ाते हैं।

5. भाषा कौशल और संचार क्षमता में सुधार ।

संस्कृत में प्रत्यय **(Suffixes),** उपसर्ग **(Prefixes)** और समास **(Compound Formation)** की संरचना स्पष्ट होती है, जिससे भाषा सीखने की क्षमता बढ़ती है।

संस्कृत पढ़ने वाले विद्यार्थियों को कई भाषाओं को आसानी से सीखने की क्षमता मिलती है।

6. न्यूरोलॉजिकल और साइकोलॉजिकल लाभ।

वैज्ञानिकों के अनुसार, संस्कृत का उच्चारण करने से मस्तिष्क में डोपामाइन **(Dopamine)** और सेरोटोनिन **(Serotonin)** हार्मोन का स्राव

होता है, जिससे मस्तिष्क अधिक सक्रिय और स्वस्थ रहता है।

न्यूरोसाइंस शोधों में पाया गया है कि संस्कृत के श्लोक पढ़ने से **Gray Matter Density** बढ़ती है, जो बुद्धि और निर्णय लेने की क्षमता को मजबूत करता है।

7. मानसिक थकान (Mental Fatigue) को कम करता है

संस्कृत भाषा के शुद्ध उच्चारण से शरीर और मस्तिष्क में सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है, जिससे मानसिक थकान और तनाव कम होते हैं।

प्रश्न : कैसे अपनाएँ संस्कृत को बुद्धि बढ़ाने के लिए ?

उत्तर : १. संस्कृत श्लोक, सूत्र और मंत्रों का उच्चारण करें (जैसे-सकलार्हत, बड़ी शांति, भक्तामर) ।

२. संस्कृत भाषा के मूल व्याकरण और शब्द रचना को सीखें। **Online** भी संस्कृत सीखा जा सकता है । युटयूब पर **video** उपलब्ध है।

३. संस्कृत में लिखे गए ग्रंथों और साहित्य का अध्ययन करें (धन्य चरित्र आदि सैंकड़ो ग्रंथ उपलब्ध है।)

४. संस्कृत के कठिन शब्दों और श्लोकों को याद करने की आदत डालें, जिससे स्मरण शक्ति बढ़ेगी।

निष्कर्ष :

संस्कृत भाषा का अभ्यास मस्तिष्क को अधिक सक्रिय और बुद्धिमान बनाता है। यह स्मरण शक्ति, तर्क शक्ति और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता को बढ़ाता है, जिससे व्यक्ति अधिक कुशाग्र और तीव्र बुद्धि वाला बनता है। इसलिए, संस्कृत का अध्ययन सिर्फ एक भाषा सीखना नहीं, बल्कि मस्तिष्क को सशक्त बनाने का एक वैज्ञानिक तरीका है ।

12 अगर आजीवन स्वस्थ रहना हो तो संस्कृत भाषा सीखकर संस्कृत के ग्रंथ खास पढे...

प्रश्न : नास्तिक हो या आस्तिक–प्रत्येक मनुष्य स्वस्थ रहना चाहता है । एलोपेथी की ट्रीटमेंट अत्यंत महंगी और रिएक्शन वाली बनती जा रही है । ऐसे समय में क्या संस्कृत का अध्ययन हमें स्वस्थ रहने के लिये सहायक बन सकता है?

उत्तर : संस्कृत भाषा का अध्ययन और उच्चारण केवल मानसिक विकास के लिए ही नहीं, बल्कि शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी माना गया है। संस्कृत के शुद्ध उच्चारण, इसके व्याकरणिक नियमों और मंत्रों के जाप से कई शारीरिक लाभ मिलते हैं।

: संस्कृत भाषा के शारीरिक फायदे :

१. मस्तिष्क की सक्रियता और स्मरण शक्ति में वृद्धि :

संस्कृत का उच्चारण मस्तिष्क के बाएँ और दाएँ दोनों भागों को सक्रिय करता है, जिससे स्मरण शक्ति (**memory power**) और ध्यान क्षमता (**concentration**) बढ़ती है।

संस्कृत पढ़ने से मस्तिष्क की न्यूरोलॉजिकल एक्टिविटी तेज होती है, जिससे व्यक्ति किसी भी विषय पर अधिक फोकस कर सकता है।

२. श्वसन तंत्र को मजबूत बनाता है :

संस्कृत के मंत्रों के उच्चारण में विशेष स्वर (**vowels**) और उच्च ध्वनियाँ होती हैं, जिससे श्वसन प्रणाली मजबूत होती है।

'ॐ' और अन्य संस्कृत मंत्रों का नियमित जाप करने से फेफड़ों की क्षमता बढ़ती है और प्राणायाम के समान लाभ मिलते हैं।

३. तनाव और चिंता (Stress & Anxiety) कम करता है :

संस्कृत भाषा का नियमित उच्चारण ऑक्सीटोसिन और सेरोटोनिन (खुशी के हार्मोन) का स्तर बढ़ाता है, जिससे तनाव और चिंता कम होती है। संस्कृत मंत्रों का जाप माइंडफुलनेस **(mindfulness)** और मेडिटेशन के समान प्रभाव डालता है।

४. उच्चारण से वाणी में सुधार :

संस्कृत के शुद्ध उच्चारण से जीभ, होठों, दाँतों और गले की मांसपेशियाँ सक्रिय होती हैं, जिससे स्पष्ट और प्रभावी बोलने की क्षमता बढ़ती है।

यह हकलाने (**stammering**) और उच्चारण दोषों को ठीक करने में सहायक हो सकता है।

५. रोग प्रतिरोधक क्षमता (Immunity) को बढ़ाता है :

कुछ शोधों के अनुसार, संस्कृत के मंत्रों और ध्वनियों के प्रभाव से शरीर में कंपन **(vibrations)** उत्पन्न होते हैं, जो कोशिकाओं को ऊर्जावान बनाते हैं और रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ाते हैं।

६. हृदय और रक्त संचार (Blood Circulation) में सुधार :

संस्कृत मंत्रों के उच्चारण से नाड़ी **(pulse rate)** संतुलित होती है, जिससे ब्लड प्रेशर सामान्य रहता है।

ध्यान और संस्कृत मंत्रों का जाप हृदय गति **(Heart Rate Variability)** को सुधारता है और हृदय रोगों के जोखिम को कम करता है।

७. योग और ध्यान में सहायक :

योग में उपयोग किए जाने वाले कई श्लोक और मंत्र संस्कृत में होते हैं, जो मेडिटेशन (ध्यान) के प्रभाव को गहरा करते हैं।

संस्कृत भाषा का अध्ययन योग अभ्यास के दौरान मानसिक शांति और आत्म-चेतना को बढ़ाता है।

निष्कर्ष : संस्कृत केवल एक भाषा नहीं, बल्कि मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य को संतुलित करने का एक माध्यम है। इसका नियमित उच्चारण और अध्ययन मस्तिष्क, हृदय, फेफड़े, और संपूर्ण शरीर के स्वास्थ्य में सुधार लाता है। इसलिए संस्कृत को केवल एक शैक्षिक भाषा ही नहीं, बल्कि स्वास्थ्यवर्धक अभ्यास के रूप में भी अपनाया जा सकता है।

आप भी अगर संस्कृत भाषा सीखना चाहते हैं तो अवश्य संपर्क करें ।

13 अगर भारत देश की भावी पीढ़ी को बचाना हो और भारत को वापस विश्व गुरु बनाना हो तो...

- अगर आप चाहते हैं कि हमारा हिंदुत्व सुरक्षित रहे...
- हमारी भावी पीढ़ी हमारे देश और हिंदुत्व के प्रति वफादार बने...
- हमारी हिंदू प्रजा आर्थिक-शारीरिक- मानसिक आदि समस्त समस्याओं से मुक्त बने...
- हमारा लेवल इतना ऊपर उठे कि राजकीय नेतागण तथा अन्य धर्म वाले भी हमारे पास सलाह लेने आए...
- तो उसके लिए जैसे हम हमारे प्रत्येक स्थान में मंदिर-आश्रम और पाठशाला बनाने का प्रयत्न करते हैं वैसे हमारे प्रत्येक स्थान के अंदर संस्कृत भाषा के क्लास भी शुरू करवाने चाहिए.
- वर्तमान में हमारे देश में जितनी भी समस्याएं हैं उसका कारण है अज्ञानता...
- इसे दूर करने के लिए हमें हमारे ग्रंथों का सहारा लेना पड़ेगा. ग्रंथों को समझने के लिए संस्कृत भाषा का ज्ञान जरूरी है.
- हमारे करोड़ों - अरबों रुपए प्रतिवर्ष ऐसे स्थान पर लग रहे हैं जिससे हमें १ रु. का भी फायदा नहीं हो रहा है.
- उसके बदले यही धन अगर हमारे ग्रंथों के प्रचार-प्रसार में लगाया जाए तो प्रतिवर्ष लाखों लोग हिंदू बनने तैयार हो जाएंगे.
- याद रखना - जो प्रजा अपने इतिहास को भूल जाती है वह प्रजा खुद इतिहास बन जाती है.

- हमें हमारा सच्चा इतिहास पता ना चल जाए इसीलिए ही हमें हमारी मातृभाषा और संस्कृत भाषा से दूर रखा गया है और अंग्रेजी भाषा का गुलाम बनाया जा रहा है क्योंकि जिस दिन हमें हमारा वास्तविक इतिहास पता चलेगा और हमारे ग्रंथों के अंदर छुपे हुए रहस्यों का पता चलने लगेगा उस दिन से हमारे जीवन की तथा समाज की समस्याओं का समाधान भी मिलने लगेगा ।
- जब तक भारत में गुरुकुलों के अंदर संस्कृत भाषा आधारित अभ्यासक्रम चल रहा था तब तक भारत सोने की चिड़िया और विश्व गुरु कहलाता था ।
- जैसे ही हमने हमारी देव पूज्य भाषा का और हमारे प्राचीन ग्रंथों का अभ्यास छोड़ा, आज हालात यह है कि अब हमारे देश को भारत के बदले महाभारत कहना वह ज्यादा योग्य लग रहा है क्योंकि रोज कहीं ना कहीं महाभारत देखने मिल रहा है ।
- अंग्रेजों के द्वारा हमारे देश पर थोपा गया वर्तमान का एज्युकेशन लेने वाले आधे से ज्यादा लोगों को तो काम ही नहीं मिल रहा है
- जबकि वर्तमान में संस्कृत के ग्रंथों को अच्छी तरह पढ़ा सके ऐसे जितने भी विद्वान है वे सब भारत में रहकर भी प्रति माह २ से ३ लाख तो आराम से कमा रहे हैं (विदेश में तो इससे डबल ही समझ लेना)
- साथ में संस्कृत ग्रंथों के अभ्यास द्वारा हमारे अंदर ऐसी विशिष्ट बुद्धि का निर्माण होता है जो हमें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता दिलवाती है ।
- इस प्रकार से देखा जाए तो संस्कृत का अभ्यास हमारी आध्यात्मिक समृद्धि के साथ जरूरत पड़े तो हमारी आर्थिक समृद्धि का भी आधार बन सकता है ।
- तो देर किस बात की है जब जागे, तब से सवेरा.

- आज से ही संकल्प करें कि ।मैं आने वाले १-२ वर्ष में संस्कृत सीख कर ही रहूंगा।।
- उसके लिए अगर कोई संस्कृत पढ़ाने वाले मिले तो हमारे सत्संग के स्थान में जब सबको अनुकूल हो उस समय संस्कृत शिक्षा की सामूहिक क्लास शुरू करवा दे ।
- हो सके तो हमारे आसपास में जो ८-१० वर्ष की उम्र से बड़े लड़के हैं जिनको अपनी मातृभाषा में पढ़ना-लिखना आ गया है उन्हें बचपन से ही संस्कृत का अभ्यास शुरू करवा दें.
- १५ वर्ष की उम्र तक तो वे संस्कृत के ग्रंथ पढ़ सके इतने समर्थ बन जाएंगे.
- फिर उन्हें स्कूल में जाने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी और जो संस्कृत श्लोक और धर्म ग्रंथ वे १० साल में भी याद नहीं रख पा रहे हैं वह संस्कृत सीखने के बाद १० महीने में ही पूरा कर देंगे.
- संस्कृत भाषा से आपको क्या फायदा हो सकता है? और नहीं सीखने से क्या नुकसान हो सकता है? यह अगर जानना हो तो यूट्यूब के **Bhagwan ka jawab** चैनल के अंदर **importance of Sanskrit language** नाम की प्लेलिस्ट के अंदर रखे गए सभी वीडियो एक बार शांति से अवश्य देख लें. **जिसका QR कोड अंत में दिया गया है ।**
- आप भी अगर यूट्यूब के वीडियो के द्वारा संस्कृत सीखना चाहते हैं अथवा संस्कृत विद्यालय के अंदर रहकर फ्री में संस्कृत भाषा सीखना चाहते हैं तो अपना नाम-उम्र-एड्रेस तथा ‘‘मैं संस्कृत भाषा सीखना चाहता हूँ’’ ऐसा लिखकर व्हाट्सएप के द्वारा मैसेज भेज कर अवश्य संपर्क करें...

अगर आप चाहते हैं कि हमारे भारत देश
की समस्याएं समाप्त हो जाए तो
इस पुस्तक को पढ़कर के अलमारी में
मत रखना परंतु आपके संपर्क में जितने भी
लोग आए उन सबको यह पुस्तक अवश्य पढ़वाना और
अगर इस पुस्तक की ज्यादा नकल चाहिए
तो अवश्य संपर्क करना और अगर इस पुस्तक
की आपको जरूरत ना हो तो नीचे लिखे
नंबर पर संपर्क करके हमें वापस अवश्य भिजवाना ।
संपर्क सूत्र – 8866355762

अगर आप अपने जीवन में आनेवाली
समस्याओं से छुटकारा प्राप्त करना चाहते हैं
तो
9427966227 नंबर पर व्हाट्सएप
के द्वारा सेंड लिंक लिखकर मैसेज करें और जो लिंक आए
उस व्हाट्सएप ग्रुप में अवश्य जुड़े ।

अगर आप जीवन के रहस्यों को
संगीत के साथ सुनना चाहते हैं और प्रत्येक परिस्थिति में
प्रसन्न रहने के सिद्धांतों को समझना चाहते हैं
तो यूट्यूब के अंदर **Bhagwan ka jawab**
चैनल पर रखे हुए सभी गीत एक बार अवश्य सुने

सही रास्ता उसे ही मिलता है
जो नसीब वाले होते हैं
और नसीब वाले वही बनते हैं
जो इस पुस्तक में लिखी हुई
बातों पर अमल करते हैं

दिशा बदलो, तो दशा बदलेगी...